

श्रीगणेशाय नमः । अथ श्रीगणेशोपनिषद्

१८^{०५}
२०२१

परावही वेसा दुर्गा व नीला वही हादिर वही,
बार-२ आबाद लशामे फाने पर श्री न लो
व नीला वही व न वही रूपं हादिर । अतः
षावपत्र अकम हापली / अकम पैरुकी में
खारिज बिना जाना है परावही फौजला सुका
होकर नम्बर से कत होकर वाकिला वफर हो

२५ ६
१५/५/२३

